

की दहलीज पर खड़े होकर एम्बुलेंस का इंजनार करते रहे, मित्रतें करते रहे, लेकिन सिस्टम की काम पर जूँत काम नहीं रेंगी। प्रशासन की इस कदर अनियमितता और लापरवाही का आलम यह था कि समय पर इलाज मिलना तो दूर, बच्चे को बड़े अस्पताल ले जाने के लिए वाहन तक नसीब नहीं हुआ। अस्पताल की इस उदासीनता के कारण अंततः मामू से नदम तोड़ दिया। यह पहली बार नहीं है जब बिरसिंहपुर सरकारी अस्पताल से ऐसी हदयविरादक खबरें सामने आई हैं, पहले भी कई बार ऐसी अव्यवस्थाओं ने लोगों को जान ली है। सवाल यह उठता है कि क्या प्रशासन की इस गंभीर चूक की भरपाई उस मां की सूनी गोंद को भरकर की जा सकती है? आखिर इस मौत का जिम्मेदार कौन है? क्या शासन और प्रशासन सिर्फ फाइलों में ही स्वास्थ्य काँति लाएगा या धरातल पर दम तोड़ते इन मामूओं की भी सुध ली जाएगी?